ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

भारत और चीन सम्बन्ध (गलवान के नजरिऐ से)

डॉ. रेनू गुप्ता (राजनीति विज्ञान)
शासकीय महाविद्यालय आरोन
श्रमाकांत (राजनीति विज्ञान)
जीवाजी विश्वविद्यलाय, ग्वालियर

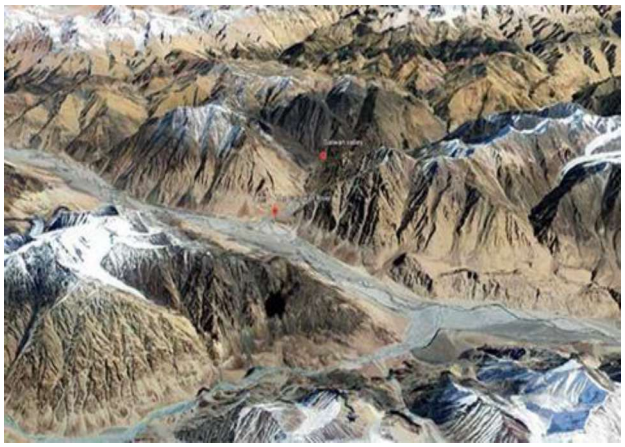

सारांश–
एक साल पहले से भारत और चीन ने लद्दाख में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल में एक दूसरे पर घुसबैठ करने का आरोप लगाते आ रहे है लेकिन हकीकत ये है कि 1962 के युद्ध के बाद इस इलाके में लगभग 3445 किलोमीटर का इलाका अभी तक चिन्हित नहीं किया गया है जिस पर भारत और चीन दोनों अपना अपना अधिपत्य जताते है और इसी को आधार बनाकर इन दोनों देशों के बीच हमेसा तना तनी रहती है और यही तना तनी आगे चलकर एक हिंसा का रूप ले लेती है ऐ हिंसा 15 जून 2020 को घटित हुई जिसे गलवान हिंसा के नाम से भी जाना जाता है आगे चलकर यही हिंसा गलवान घाटी में हाथापाई और हिंसक झड़प में तब्दील हो गई थी जिसके कारण इस झड़प में भारतीय सेना के 20 सैनिकों की मौत हो गई थी

शब्द कुंजी–
भारत, चीन, गलवान, सम्बन्ध।

परिचय–

विदेश नीति उद्देश्यों का वह समूह है जो एक राज्य व अन्य राज्यों एंव अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के संबंध में लागू करता है। यह उन विधियों एंव तौर तरीकों का समूह है जो उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है। विदेश नीति राष्ट्रीय परम्पराओं से संचालित होती हैं समस्याओं का अलग अलग समाधान विदेश नीति नही है। विदेश नीति एक स्थायी नीति होती है जो राष्ट्रीय जीवन मूल्यों तथा सांस्कृतिक परिवेश से निर्मित होती है।

विदेश नीति किसी भी देश की वह साधन है जिसके माध्यम से एक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों और आदर्शों की प्राप्ति का प्रयास करता है। विदेश नीति एक राष्ट्र का अन्य राष्ट्रों के साथ उनके प्रति कैसा व्यवहार है यह दिखाने का एक माध्यम है जिसे कई कारक प्रभावित करते है। विदेश नीति की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि राष्ट्रीय हित कितनी मात्रा में और कितने लक्ष्य की प्राप्ती हुई है यदि राष्ट्रीय हित कम मात्रा में हुआ है तो उस विदेश नीति को एक अच्छी विदेश नीति नही कहा जा सकता है।

भारत और चीन के मध्य वर्षों पुराने सम्बन्ध रहे है भारत के चीन से सम्बन्ध सम्राट अशोक के काल से माने जाते है। सम्राट अशोक के प्रयास से ही चीन बुद्ध धर्म का अनुयायी बना था। दोनों देशों के विद्वान लोग एक दूसरे के देशों में आते जाते रहे है। भारत और चीन के मध्य सांस्कृतिक और धार्मिक सम्बन्ध काफी प्राचीन से रहे है। इन सम्बन्धों के अतिरिक्त राजनैतिक सम्बन्धों का उल्लेख भी इतिहास मे देखने को मिलता है। सम्राट हर्शबर्धन तथा कश्मीर के राजाओं ने चीनी सम्राट के दरबार मे अपने राजदूतों को भेजा था तथा चीन ने भी अपने राजदूतों को भारत भ्रमण के लिऐ भेजा था।

भारत और चीन के मध्य सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे है चीन में साम्यवादी क्रांति का भारत ने समर्थन किया था और साम्यवादी चीन को अमेरिका तथा पश्चिमी देशों के विरोध के बावजूद भारत ने मान्यता दी तथा अपने दूत भेजकर राजनैतिक सम्बन्धों को कायम किया। भारत ने चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता दिलाने का सतत् प्रयास किया था।

भारत ने चीन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने का हर संभव प्रयास किया किन्तु चीन शुरू से ही साम्राज्यवाद और विस्तारवाद का समर्थक रहा है। भारत ने चीन के साथ अपने मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत किया था लेकिन भारत की सहायता का चीन ने गलत फायदा उठाया है।

आलेख का मुख्य भाग–दोनों देशों के बीच सम्बन्धों की बात की जाऐ तो यह कह सकते है कि भारत और चीन के बीच पहले से सम्बन्ध अच्छे रहे है लेकिन भारत और चीन के बीच इस वक्त सम्बन्ध एक नाजुक दौर मे है। भारत और चीन इन दोनो देशों के बीच 1962 में एक बार लड़ाई हो चुकी है जिसमें चीन की जीत हुई थी और भारत इस लड़ाई में हार गया था। इसके बाद 1965 और 1975 में भी भारत और चीन के मध्य हिंसक झड़पें हुई थी उसके बाद ऐ घटना घटित हुई है जिसका मुख्य आधार गलवान रोड या गलवान घाटी रही है। चीन हमेसा से ही विस्तारवादी की नीति को अपनाता हुआ आ रहा है और उसी नीति के चलते उसने गलवान क्षेत्र पर अपना अधिकार बताने की

कोशिश की थी जिसका विरोध भारतीय सेना के सैनिकों के द्वारा किया था और इस विरोध ने एक हिंसक घटना का रूप ले लिया था इस घटना में हथियार के तोर पर लोहे की रॉड का इस्तेमाल हुआ था इस रॉड पर कीले लगी हुई थी।

इस हिंसक घटना मे भारतीय सैना के 20 जवान शहीद हो गऐ थे। ऐ सभी जवान 16 बिहार रेजीमेंट के जवान थे। भारतीय सैना हथियारबंद थी लेकिन फिर भी भारतीय सेना ने गोली नही चलाई। इसके पीछे कारण था और वो प्रमुख कारण था सन 1996 और 2005 में हुआ समझोता था।

1996 का समझोता भारत चीन सीमा क्षेत्र में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के पास सैन्य क्षेत्र में कोन्फीडेन्स विल्डिंग मीजर्स से जुड़ा है। इस समझोते के अनुच्छेद 6(1) के अनुसार दोनो तरफ से लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के दो किलोमीटर के क्षेत्र में कोई भी गोलीवारी नही होगी और न ही किसी स्तर पर जैव अपघटन होने दिया जाऐगा साथ ही साथ खतरनाक रसायनों के प्रयोग पर भी प्रतिबंध रहेगा। इसके साथ ही न कोई विस्फोट अभियान चलाया जाऐगा और न ही बन्दूक या विस्फोट से हमला किया जाऐगा।

इसी समझोते के अनुच्छेद 6(4)के अनुसार यदि लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल पर किसी प्रकार के मतभेद के चलते दोनो पक्ष के सेनाओं की आमने सामने आने की अगर नोबत आती है तो ऐ ऐसा करने से बचने का विकल्प अपनाऐगे और इसी के साथ उस स्थिति को बिगड़ने से बचाने के हर सम्भव प्रयास करेगें। दोनों पक्ष कूटनीतिक या किसी उपलब्ध साधन के जरिऐ स्थिति की समीक्षा करेगें और तनाव कम करेंगे।

1996 के समझोते के अनुच्छेद 10(1) के अनुसार इस समझोते के कुछ प्रावधानों का अमल में आना इस पर निर्भर करेगा कि दोनो पक्ष भारत चीन सीमा क्षेत्र में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के संदर्भ में साझा मत रखते है या नही। दोनो पक्ष लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल से जुड़ी स्पष्टता और पुष्टि की प्रकिया को अपनाने पर सहमत होते है या नही।

2005 के समझोते के अनुच्छेद 1 के अनुसार दोनो पक्ष शांतिपूर्ण और दोस्ताना बात चीत से सीमा विवादों को सुलझाऐंगे। दोनो पक्ष न तो सैन्य ताकत का प्रयोग करेंगे और न ही किसी भी माध्यम से ऐसा करने की एक दूसरे को धमकी देगें।

निष्कर्ष–

गलवान घाटी विवादित क्षेत्र अक्साई में पड़ता है। गलवान घाटी लद्दाख और अक्साई चिन के बीच भारत और चीन सीमा के नजदीक स्थित है और यही पर वास्तविक नियंत्रण रेखा अक्साई चिन को भारत से अलग करती है। अक्साई चिन पर भारत और चीन दोनों अपना अपना दावा करते है यह घाटी चीन के दक्षिणी शिनजियांग और भारत के लद्दाख तक फैली हैं। यह क्षेत्र भारत के लिए सामरिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि ये पाकिस्तान, चीन के शिनजियांग और लद्दाख की सीमा के साथ लगा हुआ है।

1962 की लड़ाई के दौरान भी यह क्षेत्र(गलवान नदी) जंग का प्रमुख केन्द्र रहा था इस घाटी के दोनों तरफ के पहाड़ रणनीतिक रूप से सेना को एडवांटेज देते है यहां जून की गर्मी मे भी तापमान शून्य डिग्री से कम हो जाता है।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार इस घाटी का नाम एक साधारण व्यक्ति गुलाम रसूद गलवान के नाम पर पड़ा है ये गुलाम रसूद नामक व्यक्ति ही थे जिन्होंने इस जगह की खोज की थी। इस हिंसा का मुख्य कारण भारत के द्वारा इस क्षेत्र में बनाई जा रही रोड़ भी हो सकता है क्योंकि चीन नही चाहता की भारत किसी भी प्रकार से क्षेत्र पर अपना अधिकार जताऐ।

गलवान घाटी क्षेत्र का इतिहास काफी खतरनाक रहा है। लद्दाख पर एलएसी पर स्थित गलवान इलाके को चीन ने अपने कब्जे में ले रखा है चीन के अतिक्रमण को रोकने के लिए भारतीय जवान गलवान नदी में भी नाव के जरिए नियमित गश्त करते है गलवान नदी पर भारत की ओर से पुल बनाया जा रहा है मौजुदा हालात के तनाव को देखते हुऐ भारत ने पुल का निर्माण और तेज कर दिया है इस पुल को बनाने की जिम्मेदारी बीआरओ को दी गई है

इसी के साथ ही साथ गलवान घाटी में भारत सड़क का निर्माण भी कर रहा है जिसे रोकने के लिए चीन कई बार सीमा पर तनाव फैलाने वाली हरकत करता रहता है। डी.बी.ओ (दरबुक भयोक दौलत बेग ओल्डी रोड) भारत को इस पूरे इलाके में बड़ा लाभ दे सकती है। यह रोड काराकोरम के पास के नजदीक तैनात जवानों तक सामान एंव गोला बारूद आदि की आपूर्ति के लिए बेहद अहम है। डी.बी.ओ. सेक्टर अक्साइड चिन पठार पर भारतीय मौजूदगी की नुमांइदगी का प्रतीक है। वही चीन गलवान घाटी में भारत के निर्माण को गैर कानूनी कह रहा है क्योंकि भारत चीन के बीच हुए समझौते के हिसाब से एलएसी को मानने और नये निर्माण नहीं करने की बात की गयी है।

चीन वहां पहले ही जरूरी सैन्य निर्माण कर चुका है और अब वह मौजूदा स्थिति बनाये रखने की बात कर रहा है। अपनी स्थिति मजबूत करने के लिऐ अब भारत

भी वहां पर सामरिक निर्माण करना चाहता है गलवान घाटी के आसपास के क्षेत्र में चीन ने कई चौकियों का निर्माण भी कर लिया है।

संदर्भ सूची–

1. *हरीश कुमार खत्री, भारत की विदेश नीति, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल मध्य प्रदेश, 2012. पृ.क. 131*
2. *डॉ. मथुरालाल शर्मा और शशी के. जैन, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, कॉलेज बुक डिपो त्रिपोलिया बाजार जयपुर पृ.क. 256*
3. *जे. एन. दिक्षित, भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, 2018. पृ.क. 213*
4. *डॉ. बी. एल फड़िया, भारत एंव अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा उत्तर प्रदेश, 2017. पृ. क. 11*
5. *राजीव बंसल, भारतीय विदेश नीति, एस. बी. पी. डी. पब्लिकेशन आगरा, उत्तर प्रदेश, पृ.क.51*
6. *बी. एन. खन्ना और लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति, एस. चान्द पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2019. पृ. क. 25*